

उत्तराखंड के लोक कलाकार- श्री भवानी राम जी

Dr. Bhaskar Dutt Kapri¹, Dr. Gagandeep Hothi², Dr. Rita Pandey Kapri³

¹ Music Teacher, PM SHRI Kendriya Vidyalaya, Pithoragarh, Uttarakhand

² Associate Professor, Department of Music, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital

³ Researcher and Trainer (Music NET/JRF), Pithoragarh, Uttarakhand

 Read the Article Online



 Cite this Article

Published on 10 May, 2026

Kapri, B.D., Hothi, G., Kapri, R.P. (2026). Uttarakhand Ke Lok Kalakar- Shri Bhavani Ram Ji. Swar Sindhu, 14(1), 185-193.

सार

अपनी लोकसंस्कृति, लोकगीतों और लोकथात को जानने और सीखने हेतु जब हम लोक कलाकारों की खोज करते हुए उत्तराखंड के चौखुटिया गोवाड़ क्षेत्र पहुँचे तो हमें एक ऐसी शिखिायत के बारे में पता चला जिन्हें इस क्षेत्र के बूढ़े से लेकर बच्चा-बच्चा तक जानता है। हमने अक्सर यह सुना था कि लोक कलाकार बनते नहीं अपितु मिट्टी से ही पैदा होते हैं। लोक कलाकार का जीवन बड़ा ही विषम, विकट व पीड़ा भरा होता है। वास्तव में हमने किसी लोक कलाकार की जीवन शैली, दर्द, जीवन संग्राम, सांगीतिक यात्रा आदि यदि धरातल पर देखा है तो वह है- 'श्री भवानी राम जी'। अनेक कौतूहल भरे प्रश्नों के उत्तर की खोज में हम 'श्री भवानी राम जी' से जाकर मिले और उनके घर पर रहे। कुछ दिन उनके साथ समय व्यतीत करने के बाद वास्तव में समझ आया कि लोक कलाकार केवल कलाकार नहीं अपितु वह हमारे समाज की संस्कृति का सच्चा वाहक होता है जो प्रतिपल अपने कर्तव्य हेतु निष्ठावान रहता है। भवानी राम जी के लोक गीतों में प्राचीन इतिहास व मनोरंजन से सम्बंधित तथ्यों की प्रचुरता तथा माता-पुत्र के स्नेह की झाँकी भी देखने को मिलती है। लोकगायक के साथ-साथ भवानी राम जी अनेक लोक वाद्यों हुड़का, रणसिंगा इत्यादि वादन में भी पारंगत हैं। प्रस्तुत शोधपत्र पूर्ण रूप से साक्षात्कार पर आधारित है। अतः इस पत्र में 'भवानी राम जी' की जीवन शैली के साथ-साथ उनके सांगीतिक संघर्ष को विस्तार पूर्वक लिखा गया है। सांगीतिक दृष्टिकोण से उनके द्वारा रचित व गाये गये लोकगीतों को स्वरलिपिबद्ध करते हुए स्थानीय भाषा के आधार पर लिखने का प्रयास भी इस शोध-पत्र में सम्मिलित है। साक्षात्कार के दौरान भवानी राम जी से प्राप्त जानकारी को प्रश्नोत्तर शैली में तथा क्षेत्रीय स्तर पर किये गये कार्यों को चित्रदीर्घा के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द- भवानी राम, गायक, लोकगीत, रणसिंगा, स्वरलिपि, झोड़ा।

प्रस्तावना

'श्री भवानी राम जी' का परिचय- श्री भवानी राम जी का जन्म ग्राम ग्वाली, आगरनौला, चौखुटिया में हुआ। इनके पिता का नाम 'श्री गंगा राम' तथा माता का नाम 'श्रीमती चंद्रा देवी' है। ग्राम 'आगरनौला' अल्मोड़ा जनपद के 'चौखुटिया' बाजार से लगभग बीस कि०मी० की दूरी पर स्थित है। भवानी जी के घर पहुँचने हेतु प्रारम्भिक 10-12 कि०मी० का रास्ता वाहन से जाने योग्य है परंतु उसके बाद बेहद थकान भरा पहाड़ी दुर्गम मार्ग प्रारम्भ हो जाता है। भवानी जी नित्य प्रति यहाँ से पैदल बाजार आते हैं।

पिचासी वर्ष की उम्र में भी उन्हें कोई व्याधि नहीं। इतना ही नहीं वे जब सुर लगाते हैं तो एक रियाज़ी कलाकार की भाँति उनके गले से अविच्छिन्न स्वर प्रस्फुटित होता है। श्री भवानी राम जी लोक की अनेक विधाओं में पारंगत हैं। वे कुमाऊँनी लोक वाद्य रणसिंगा, हुड़का व मुरली बड़ी ही कुशलता से बजा लेते हैं। इसके साथ ही कुमाऊँनी लोक गीत झोड़ा, बैर-भगनौल, छपेली आदि के गायन में उनका जवाब नहीं। अपने संगत वाद्य हुड़के पर गायकी के साथ-साथ आवश्यकता पड़ने पर वे जागर भी लगा लेते हैं।¹

'श्री भवानी राम जी' की जीवन शैली

चौखुटिया विकास खण्ड के सुदूर गाँव ग्वाली, आगरनौला के रहने वाले लोक कलाकार 'श्री भवानी राम जी' बहुत ही साधारण सीधे-सादे स्वभाव व विशाल हृदय वाले व्यक्ति हैं। भवानी राम जी अपने पूर्वजों के समय से इसी गाँव में रहते हैं। इनके जीवन यापन करने की शैली बहुत ही सादगी भरी लेकिन कष्टप्रद है। आज के दौर में भी वे विषम व कठोर जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

¹राम, भवानी (लोक कलाकार), रीता पाण्डे कापड़ी द्वारा साक्षात्कार, 12 सितम्बर 2020, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, ऑडियो-वीडियो संकलन, ग्राम-आगरनौला, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

वर्तमान में भवानी जी अपनी धर्मपत्नी एवं एक पोती के साथ इस गाँव के अंतिम छोर अर्थात् जंगल के बीच में बने एक छोटे से घर में रहकर गुजर-बसर कर रहे हैं। यहाँ दूर-दूर तक न तो कोई घर दिखाई देता है न ही किसी की कोई आवाज सुनाई देती है। दिन के समय सूर्य की रौशनी में जहाँ यह प्राकृतिक स्थान सुरम्य, ऊर्जावान व गतिशील लगता है वहीं इसके विपरीत रात्रि में इस स्थान पर घनघोर सन्नाटे के सिवाय कुछ भी नहीं। रात्रि के इस मौन में बोलना भी ऐसा प्रतीत होता है, जैसे- साधनारत योगी के सामने बोलना। इसके बावजूद इनका परिवार कुमाऊँ की पुरातन परंपरा के अनुसार आज भी दिन व रात्रि दोनों समय का भोजन घर से बाहर बने पारंपरिक चूल्हे पर ही बनाता है। रात्रि के समय जंगली जानवरों का खतरा भी यहाँ पर बना रहता है। पत्थर व मिट्टी से बने भवानी जी के पारंपरिक घर में आधारभूत जरूरतों के अतिरिक्त सुविधा की कोई भी वस्तुएँ नहीं हैं।

यहाँ पर पानी व नल की फिटिंग तो दूर रोजमर्रा के कार्यों व पेयजल हेतु नौलों से पानी लाना पड़ता है जो घर से थोड़ी दूरी पर स्थित हैं। घर के भीतर ही एक गोठ (पहाड़ों में नीचे के कमरे) भी है जिसमें गायें रहती हैं। इसके साथ-साथ वे जीवन यापन हेतु मुर्गी-पालन व बकरी-पालन भी करते हैं।¹ यहाँ पर दूर-दूर तक एक भी दुकान इत्यादि नहीं है अतः भवानी जी और इनके परिवार वालों को छोटी से छोटी दैनिक वस्तु के लिए भी कोसों दूर चलकर मुख्य मोटर मार्ग पर जाना पड़ता है। चौखुटिया मुख्य बाजार पहुँचने में लगभग इन्हें डेढ़ से दो घंटे का समय लगता है।

वास्तव में भवानी जी हमारी लोक कला के सच्चे वाहक हैं जो इतनी अधिक उम्र में आज भी लोक की कई विधाओं को पूरे रुझान व समर्पण के साथ अपना कर्म और धर्म समझते हुए निभा रहे हैं। भवानी जी अपनी इन परिस्थितियों में भी खुश हैं। इतनी कष्टप्रद जिंदगी में भी वे अपनी निजी व पारिवारिक व्यथायें न सुनाकर केवल एक ही प्रार्थना करते हैं- “बतौर लोक कलाकार उनकी लोगों से, समाज से, संस्थाओं से और सरकार से बस यही अपील है कि हमारी लोक संस्कृति व कला का संरक्षण करने का प्रयास कीजिये। इन्हें सीखने-सिखाने हेतु अवसर व मंच दीजिये। जब कलाकार ही नहीं बचेंगे तो कला कैसे पोषित होगी। बचे हुए कलाकारों के साथ ही यह लोक विधायें भी विलुप्त हो जायेंगी।”

‘श्री भवानी राम जी’ से हमारा पहला परिचय- श्री भवानी राम जी से हमारा पहला परिचय ‘श्री जसीराम जी’ (लोक कला प्रेमी व संरक्षक) की स्टेशनरी शॉप में हुआ था। उस वक्त हम श्री जसीराम जी से लोकसंस्कृति की परिचर्चा हेतु उनके समक्ष गये थे। भवानी राम जी इनकी दुकान पर अक्सर अपने शाम का समय व्यतीत करने हेतु बैठा करते थे। परिचय हो जाने के बाद उन्होंने उसी समय के घटनाक्रम का एक गीत बनाया। गीत सुनने के बाद हम स्तब्ध थे। उनकी आवाज ऐसी सधी थी जितनी एक कुशल शास्त्रीय गायक की होती है। किसी एक स्वर पर बिना हिले अनवरत सुर लगाना, मुश्किल हरकतों को सहजता से लगाना आदि उनके लोक गीतों की विशेषता है। दीर्घ स्वर का लगाव उनके उत्तम स्वास्थ्य का परिचायक है। उनसे संवाद के दौरान पता चला कि वह रोजाना अपने ग्राम ‘ग्वाली’ से बाजार पैदल आया-जाया करते हैं जो लगभग 10-12 कि०मी० का ऊबड़-खाबड़ व दुर्गम मार्ग है। वे बताते हैं कि रोजाना पैदल चलने के कारण उनका शरीर पूर्ण रूप से हृष्ट-पुष्ट है।

अतः भवानी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर हमने इस क्षेत्र के और भी लोक कलाकारों को खोजने व यहाँ की संस्कृति को और अधिक जानने का निर्णय लिया और कार्य को मूर्त रूप देने हेतु इस स्थान पर रहते हुए हमने अपना कार्य प्रारंभ किया। शुरूआती समय में हम रोजाना यहाँ के लोगों से अपने शोध की चर्चा-परिचर्चा हेतु मिला करते थे।

‘श्री भवानी जी’ का रणसिंगा वादन- पहले समय में ऐसा कोई शुभ अवसर नहीं था जिसमें इस जोरदार ध्वनि वाले साज का वादन न होता हो। युद्ध के मैदान में उद्धोष हेतु, मंदिरों, जागरों, जन्म के समय इत्यादि अवसरों पर इसका जोरदार वादन किया जाता था। पहले की अपेक्षा इसका प्रचलन अब कम हो गया है लेकिन आज भी इसे हर शुभ कार्य में सूचना देने हेतु बजाया जाता है। रणसिंगा बजाने को भवानी जी ‘रणसिंग दुधारना’ कहते हैं। श्री भवानी जी बताते हैं कि ‘रणसिंगा’ का निर्माण तीन भागों में होता है। तीनों भाग तांबे की धातु से निर्मित होते हैं तथा इनके वृत्ताकार जोड़ पर पीतल का प्रयोग किया जाता है। इसका वजन लगभग एक किलो के आस-पास होता है। पहले समय की बात बताते हुए वह स्वयं के बारे में बताते हैं कि- पहले में एक हाथ से रणसिंगा बजाकर शंकरा को खिलाता था अर्थात् छोलिया नृत्य के साथ यह मुख्य संगत वाद्य हुआ करता था। इसे बजाते हुए गले की नसें फूल जाती हैं। अतः इस साज को बजाने हेतु काफी लम्बी साँस और ताकत का प्रयोग होता है।

¹ वही

आज भवानी राम जी की उम्र 85 वर्ष हो गई है। इसके बावजूद उन्होंने हमारे सामने रणसिंगा बजाया। यह प्रमाण है कि इतनी अधिक उम्र में भी रणसिंगा वादन केवल मंझा हुआ कुशल कलाकार ही कर सकता है। इसे रखने हेतु वह कपड़े के एक लम्बे झोले का प्रयोग करते हैं।¹ वर्तमान में उनके पास जो रणसिंगा है उन्होंने उसे लगभग पैंसठ साल पहले मात्र पाँच सौ रूपये में खरीदा था लेकिन आज इस साज की कीमत लगभग तीस हजार रूपये है। रणसिंगा को खरीदने के पीछे वह बताते हैं कि जब वह इसे खरीदने मासी बाजार गये तब दुकानदार ने उन्हें इसकी कीमत छः सौ रूपये बताई। भवानी राम जी द्वारा उसी दुकान पर इसे बजाया गया। उनके रणसिंगा वादन से प्रभावित होकर वहाँ उपस्थित अनेक व्यक्तियों ने भी रणसिंगा खरीदने का निर्णय किया और देखते ही देखते दुकान से चार-पाँच साज तत्काल बिक गये। इससे प्रसन्न होकर दुकानदार ने भवानी राम जी को मात्र पाँच सौ रूपये में रणसिंगा दे दिया। वह बताते हैं कि जब उनका बेटा घर आता है तो वह भी रणसिंगा बजाता है।

लोकगायक 'भवानी राम जी' द्वारा अनेक स्थानीय मंचों, मेलों, कार्यक्रमों में लोकगीतों की प्रस्तुति दी गयी। उन्होंने कुमाऊँनी भाषा में अनेक लोकगीतों की रचना भी की है। गीतों में प्रयुक्त कुमाऊँनी शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं:

लौकि- छुपाना, सौज्यू- ससुर, कैठ- काँठा या पहाड़ी, गैठ- गाँठ, तामी- अन्न मापने का एक पात्र, कौयों- कहना मानना, पौयों- एक वृक्ष, खुकुरी- चाकू²

भवानी राम जी की रचनाएँ

झोड़ा

लौकि लछिमा, सौज्यू ले मिरग, मारौ लछिमा कैठ कौ कैठ छौ।

भौजी अनूपा, तीहैणी पौजिया, लायो अनूपा गैठ कौ गैठ छौ।।

लौकि लछिमा, सौज्यू ले मिरग, मारौ लछिमा कैठ कौ कैठ छौ।

भौजी अनूपा, तीहैणी बिछुवा, लायो अनूपा गैठ कौ गैठ छौ।।³

स्वरलिपि (मध्य लय, छः मात्रा)

1	2	3		4	5	6
प	-	प		ध	प	म
लौ	ऽ	कि		ल	छि	ऽ
प	म	रे		म	प	ध
मा	ऽ	ऽ		सौ	ज्यू	ऽ
प	-	म		रे	म	-
ले	ऽ	मि		र	ग	ऽ
प	-	-		ध	प	म
मा	ऽ	रौ		ल	छि	ऽ
प	म	रे		म	प	ध
मा	ऽ	ऽ		कै	ट	ऽ
प	-	म		रे	म	-
कौ	ऽ	कै		ट	छौ	ऽ
X				0		

¹ राम, भवानी (लोक कलाकार), रीता पाण्डे कापड़ी द्वारा साक्षात्कार, 18 सितम्बर 2020, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, ऑडियो-वीडियो संकलन, ग्राम-आगरनौला, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

² वही

³ वही

सार- भवानी राम जी ने इस रचना को 'ध्रुपद' कहा है। इसके साथ संगत वाद्य हुड़के पर बजने वाले बोल निम्नलिखित हैं-

1	2	3		4	5	6
भं	s	प		प	भं	s
X				0		

पौराणिक झोड़ा

राम जपिले सीत रावणा, राज करिले पाट दा हो। न कर न कर रावणा, राम साथ युद्ध दा।

जुमोई का गोद रावणा, जुमोई का गोदा दा। न कर न कर रावणा, राम साथ युद्ध दा।

फूली गौयो पौँयो रावणा, फूली गौयो पौँयो दा। न कर न कर रावणा, मान मेरो कौँयो दा।

गड़ी हाली तामी रावणा, गड़ी हाली तामी दा हो। न कर न कर रावणा, वाछै अंतर्यामी दा।

खुकुरी को खाँच रावणा, खुकुरी को खाँच दा। बानरों को दल पैयेगो, पंपापुर माज दा।

फूली गौयो गढिया रामा, बली गाडौ गाड़ी दा। नकर नकर रावणा, मन भट घरी दा।¹

सार- इस पारंपरिक रचना में रानी मंदोदरी द्वारा रावण से प्रार्थना की जा रही है कि वे भगवान राम के साथ युद्ध ना करें। साथ ही भगवान राम के गुणों का वर्णन कर उनके अंतर्यामी होने की बात भी बताई जा रही है। भवानी राम जी ने उपर्युक्त झोड़े में 'तामी' शब्द का प्रयोग किया है। यह मध्यकालीन उत्तराखंड का अन्न मापने का एक पात्र था। इससे वर्तमान तराजू के समान लेन-देन होता था। इसका मापन इस प्रकार है- 2 तामी = 1 माणा, 2 माणा = 1 कूड़ी, 2 कूड़ी = 1 पाथा, 16 पाथा = 1 दोणा। ये सभी इकाइयाँ मापने के लिए प्रयोग की जाती थी। मध्य काल में व्यवसायिक तौर पर इन्हीं मापों को आधार माना जाता था।²

स्वरलिपि

1	2	3		4	5	6
सा	-	-		सा	ध	सा
रा	म	ज		पि	ले	ऽ
रे	ग	-		रे	ग	सा
सी	त	रा		व	णा	ऽ
रे	-	-		रे	ग	रे
रा	ज	क		रि	ले	ऽ
सा	ध	-		सा	-	-
पा	ट	ऽ		दा	हो	ऽ
सा	-	-		सा	ध	सा
न	क	ऽ		र	न	ऽ
रे	ग	-		रे	ग	सा
क	र	रा		व	णा	ऽ
रे	-	-		रे	ग	रे
रा	म	ऽ		सा	थ	ऽ
सा	ध	-		सा	-	-
यु	द्ध	ऽ		दा	हो	ऽ
X				0		

¹ वही

² राम, भवानी (लोक कलाकार), रीता पाण्डे कापड़ी द्वारा साक्षात्कार, 19 सितम्बर 2020, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, ऑडियो-वीडियो संकलन, ग्राम-आगरनौला, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

झोड़ा

आछै भ्यारा चाधैं नानी ब्वारी कि मेरो गुमानी आ। आछै खोई को पाथरा चाधैं कि मेरो गुमानी आ।

आछै खोई वालो जौतो चाधैं कि मेरो गुमानी आ। आछै लठी की पटर चाधैं कि मेरो गुमानी आ।

दै ठेकी पटोर चाधैं कि मेरो गुमानी आ। छापड़ी का रवाटा चाधैं कि मेरो गुमानी आ।

आछै भ्यारा चाधैं नानी ब्वारी कि मेरो गुमानी आ। आछै भ्यारा चाधैं नानी ब्वारी कि मेरो गुमानी आ।¹

सार- प्रस्तुत झोड़े में माँ अपने बेटे 'गुमानी' के घर आने की खबर बार-बार अपनी छोटी बहू से पूछती है और कहती है बाहर देख तो कहीं मेरा गुमानी आ तो नहीं गया। इस रचना में माँ का पुत्र के प्रति प्रेम भाव प्रस्फुटित होता है।

स्वरलिपि

1	2	3		4	5	6
ध	-	ग		रे	ग	रेसा
आ	ऽ छै		भ्या	रा	ऽऽ	
रे	-	ग		रे	सा	धप
चा	ऽ	धैं		ना	नि	ऽऽ
ध	-	ग		रे	ग	रेसा
ब्व	ऽ	रि		कि	मे	ऽऽ
रे	-	ग		रे	सा	ध
रो	ऽ	गु		मा	नी	ऽ
ध	-	-		-	-	-
आ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ
X				0		

नयी परंपरा का झोड़ा (साली-भिना संवाद)

किलै करोछौ फोन वे त्वीलै, किलै रूकै छौ गाड़ि। किलै पैनौ छौ जींस कमीज, कांगे तेरी साड़ि।

मैले नि करो फोन वे भीना, मैले नि रूकै गाड़ि। मैले नि पैनौ जींस कमीज, मैले पैरो छौ साड़ि।

किलै निकरो फोनवे त्वीलै, किलै नि रूकै गाड़ि। किलै नि पैनौ जींस कमीज, किलै पैरो छौ साड़ि।

मैले करो छौ फोन वे भीना, मैले रूकै छौ गाड़ि। समय की बात वे भीना, मैले नि पैरो साड़ि।

किलै करोछौ फोन वे त्वीलै, किलै रूकै छौ गाड़ि। किलै पैनौ छौ जींस कमीज, कांगे तेरी साड़ि।²

स्वरलिपि

1	2	3		4	5	6
रे	म	रे		मध	(प)	म
कि	लै	क		रो	छौ	s
रे	रे	रे		म	(सा)	s
फो	न	वे		त्वै	लै	s
रे	म	रे		मध	(प)	म

¹ वही

² वही

कि	लै	रू		के	छौ	s
रे	रे	s		s	s	s
गा	ड़ि	आ		रे	रे	रे
रे	म	रे		मध	(प)	म
कि	लै	पै		नौ	छौ	s
रे	रे	रे		म	(सा)	s
जीं	स	क		मी	ज	s
रे	म	रे		मध	(प)	म
कां	s	गे		ते	री	s
रे	रे	s		s	s	s
सा	ड़ि	s		s	s	s
		X				0

झोड़ा (साली-भिना)

दुलि मायादारा वै दुलि चल चौकोटा। नी आनौ नी आनौ हो भिना त्तर चौकोटा।।

चल चौकोटा दुलि माया दारा वै दुलि चल चौकोटा। त्तर चौकोटा टेड़ो मेड़ो बाट छै भिना त्तर चौकोटा।।

म्यर चौकोटा झुंगर को भात वै खाली म्यर चौकोटा। त्तर चौकोटा झुंगर को भात नी खानू त्तर चौकोटा।।

म्यर चौकोटा गौहोते की दाल वै खाली म्यर चौकोटा। त्तर चौकोटा गौहोते की दाल नी भानी त्तर चौकोटा।।

म्यर चौकोटा छाजा में भैरौलि दुलि म्यर चौकोटा। त्तर चौकोटा छाजा लै नी चैन भिना त्तर चौकोटा।।

चल चौकोटा दुलि मायादारा वै दुलि चल चौकोटा। नी आनौ नी आनौ हो भिना त्तर चौकोटा।।¹

सार- भवानी राम जी द्वारा स्वरचित उपर्युक्त दोनों झोड़ों में जीजा-साली का संवाद व नोक-झोंक दिखाई देती है।

श्री भवानी राम जी (साक्षात्कार)

प्रश्न- कृपया आप आपका सूक्ष्म परिचय दीजिए?

उत्तर- मेरा जन्म ग्राम ग्वाली, आगरनौला, चौखुटिया में हुआ। मेरे पिता का नाम 'श्री गंगा राम' तथा माता का नाम 'श्रीमती चंद्रा देवी' है। मैं कभी स्कूल नहीं गया। लोक की यह विधा मुझे मेरे पिताजी द्वारा विरासत में ही मिली है।

प्रश्न- जीवन यापन हेतु आपका निश्चित रोजगार क्या है?

उत्तर- गौ पालन, मुर्गी पालन व कृषि।

प्रश्न- आप लोक कलाओं की कौन-कौन सी विधाओं को जानते हैं?

उत्तर- मैं लोक की कई विधायें जानता हूँ। कुमाऊँनी लोकगीतों में झोड़ा, छपेली, चाँचरी व बैर-भगनौल के साथ-साथ जागर भी लगाता हूँ। लोक वाद्यों में रणसिंगा, हुड़का व मुरली बजाना बचपन से ही मेरा शौक रहा है।

प्रश्न- लोक गीत आपने कैसे सीखे?

उत्तर- पहले मेरे पिताजी गाते थे फिर मैंने भी उन्हीं का अनुसरण किया। बचपन से ही मैं उनके साथ कार्यक्रमों में जाया करता था। मैंने सुन-सुनकर ही इस विद्या को सीखा।

प्रश्न- आपके द्वारा बजाये जाने वाले लोक वाद्यों का निर्माण आप स्वयं करते हैं?

¹ राम, भवानी (लोक कलाकार), रीता पाण्डे कापड़ी द्वारा साक्षात्कार, 20 अक्टूबर 2020, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, ऑडियो-वीडियो संकलन, ग्राम-आगरनौला, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

उत्तर- नहीं, मेरे पास जितने भी लोक वाद्य हैं, वह सब मैंने खरीदे हैं।

प्रश्न- अच्छे हुड़के की पहचान क्या है?

उत्तर- सबसे पहले तो हुड़के की लकड़ी ठीक तरह से सुखी हुई होनी चाहिए व इसका निर्माण कुशलता से किया जाना चाहिए। हुड़के का खोल ना ज्यादा बड़ा होना चाहिए ना ही बहुत छोटा।

प्रश्न- आप हुड़के में कौन-कौन सी ताल बजाते हैं या इन्हें कैसे समझते हैं?

उत्तर- मैं अलग से तो इसकी ताल नहीं बता सकता लेकिन किसी भी गीत के साथ हुड़का बजा लेता हूँ।

प्रश्न- आप हुड़के के बोल पढ़कर या बोलकर बता सकते हैं?

उत्तर- नहीं।

प्रश्न- आप इन विधाओं को अब तक कहाँ-कहाँ व किन-किन स्थानों पर पेश कर चुके हैं?

उत्तर- उत्तराखंड के कई क्षेत्रों में आयोजित होने वाले तीज-त्यौहार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों व मेलों में ही बजाता हूँ।

प्रश्न- लोक विधा को पेश करते हुये क्या आपका कोई विशेष पहनावा होता है?

उत्तर- हाँ, मैं हमेशा कुमाऊँनी परिधान कुर्ता-पैजामा, वासकेट टोपी व गमछा पहनकर ही कार्यक्रम पेश करता हूँ। इसके साथ हुड़का जरूर होता है।

प्रश्न- आपके सहयोगी कलाकार (भाग लगाने वाले) कौन-कौन हैं? उनका परिचय?

उत्तर- मेरे साथी कलाकार- श्री मदन कन्याल जी (हास्य कवि), श्री सुरेश बोरा जी (हुड़किया बौल गायक), श्री देवरम जी (लोक कलाकार), श्री चन्नर राम जी (लोक कलाकार) आदि।

प्रश्न- आपने किसी अन्य को भी इस विधा को सीखने के लिए प्रेरित किया?

उत्तर- हाँ, मैंने अभी तक बहुत लोगों को यह विद्या सिखाई। लोग मेरे पास आते हैं तो मैं पूरी ईमानदारी व खुले हृदय से बता देता हूँ। कोई गीत सुनाने को कहता है तो मैं वह भी कह देता हूँ।

प्रश्न- लोक कला के प्रति आपके अनुभव के बारे में विस्तार से बताइये?

उत्तर- मुझे गाने-बजाने और अपने कार्य को करने में तो ऐसा आनंद आता है कि समय की बाध्यता के बिना में घंटों तक इसमें रम जाता हूँ। यह ऐसी विधा है जो एक बार सीख ले तो इसके बिना रह नहीं सकता। रोकने व डांटने के बावजूद भी जिसको रंग होगा वह कैसे भी इसको कर ही लेता है।

प्रश्न- लोक-विधाओं के लिए आपको कोई सम्मान, प्रशस्ति-पत्र, नौकरी, पेंशन या धनराशि प्राप्त हुई है?

उत्तर- पुराने समय में तो बहुत कम इज्जत मिलती थी लेकिन तीज-त्यौहार, मेले इत्यादि में गाने हेतु आमंत्रण मिलता था व उसके बदले थोड़ी बहुत दान-दक्षिणा दी जाती थी। पिछले कुछ वर्षों से अब स्थिति थोड़ा ठीक है। कोई निश्चित धनराशि अभी भी नहीं मिलती। इस कार्य हेतु नौकरी या पेंशन के बारे में हकीकत में तो बहुत दूर कभी सपने में भी नहीं सोचा।

प्रश्न- वर्तमान में आपके पास अपनी विधाओं के संदर्भ में कोई लिखित दस्तावेज, रिकॉर्डेड ऑडियो-विडियो, न्यूज पेपर कटिंग या अन्य जानकारी किसी रूप में उपलब्ध है?

उत्तर- हाँ, लगभग इन सभी माध्यमों में उपलब्ध है।

प्रश्न- पहले से लेकर अब तक क्या परंपराओं में कोई परिवर्तन आया है?

उत्तर- हाँ, मैंने हमारी लोक संस्कृति में बहुत बड़ा बदलाव देखा है। पहले के लोग सुख-दुख, तीज-त्यौहार, जन्म-मृत्यु इत्यादि सामूहिक काम-काजों में भागीदारी निभाते थे। लोकगीतों को बड़े चाव से सुनते व गाते भी थे। आज सभी अपने-अपने काम में व्यस्त हैं। काम-काज पहले भी थे लेकिन मनुष्य एकता में विश्वास रखता था। परंपराओं के नाम पर आज न तो बोली, न पहनावा, न पारंपरिक गीत, न त्यौहार कुछ भी शेष नहीं बचा।

प्रश्न- आपके बच्चे या परिवार के अन्य लोग इस विधा को सीख रहे हैं?

उत्तर- हाँ, थोड़ा-बहुत विरासती तौर पर अपने आनंद के लिए गाते-बजाते हैं लेकिन सार्वजनिक स्थानों या रोजगार की दृष्टि से कोई अपना ना नहीं चाहता।

प्रश्न- एक लोक कलाकार होने के नाते आपकी क्या-क्या समस्याएँ हैं?

उत्तर- समस्याएँ तो अनगिनत हैं। सम्मान व उचित पारितोषिक नहीं मिलता।

प्रश्न- लोक कलाकार होने के कारण अन्य लोगों का आपके प्रति कैसा व्यवहार होता है?

उत्तर- यह लोगों की अपनी प्रवृत्ति होती है। कहीं बहुत सम्मान, कहीं साधारण तो कहीं अमानवीय व्यवहार भी होता है। कहीं अच्छा भी होता है और कहीं बुरा भी होता है।

प्रश्न- “वर्तमान समय में लोक कलाकारों व इस विधा को सीखने की जन रुचि घट ही नहीं रही अपितु इसका भविष्य भी विलुप्ति की कगार पर है”। इस विषय में आपका क्या मत है? इसके कारण क्या रहे होंगे?

उत्तर- आज की पीढ़ी बिना सुने-समझे ही कह देती है कि हमारी संस्कृति में रखा ही क्या है। पहले ठीक से अपनी संस्कृति को पहचानोगे तभी तो उसे सीखने-सिखाने में भी रंग आएगा। जानकारी के अभाव में आने वाले बच्चे संस्कृति की मिटास से दूर होते जा रहे हैं। माता-पिता ही बच्चों को संस्कारित करते हैं लेकिन आज वे ही अपने बच्चों से इस तरह की कोई बात नहीं करते तो कैसे यह संस्कार हस्तांतरित होगा? आज की जीवन शैली व आधुनिक शिक्षा पद्धति ने ना जाने कौन सा बोझ डाल दिया है कि बच्चों के पास अपनी संस्कृति के लिये समय ही नहीं। जब इस ओर ध्यान व समय ही नहीं दिया जाएगा तो कहाँ से इसका विकास होगा। वर्तमान स्थिति को देखते हुए लगता है की वह दिन दूर नहीं जब लोग वापस अपनी नींव और अपनी जड़ों को ढूँढ़ेंगे लेकिन तब तक बहुत देर हो जाएगी। बचे हुए कला के संरक्षकों के साथ ही यह विधा भी चली जाएगी तब पछतावे और काश के सिवा कुछ भी शेष नहीं होगा।

प्रश्न- लोक संस्कृति को आगे बढ़ाने हेतु आपके क्या सुझाव हैं?

उत्तर- सबसे पहले मैं सभी माता-पिता से यह निवेदन करूँगा कि वे अपनी संतान को अपनी संस्कृति से अधिक से अधिक जोड़ें। आज के बच्चे यदि लोक कलाकारों व गुणीजनों के पास जाकर लगन से सीखें तो यह कला आगे ही बढ़ेगी। इसके साथ-साथ यदि कोई सरकारी योजना के तहत लोक विधाओं को सीखने-सिखाने की कार्यशालाएँ आयोजित कराई जायें तो अवश्य ही हमारी कला आगे बढ़ेगी।



झोड़े गाते हुए गेवाड़ घाटी के लोक कलाकार



लोक गायक श्री भवानी राम जी हुड़के के साथ गाते हुए



श्री भवानी राम जी रणसिंगा बजाते हुए



अपनी पोती को लोकगीत सिखाते हुए श्री भवानी राम जी



श्री भवानी राम जी का घर



श्री भवानी राम जी द्वारा पशुपालन

निष्कर्ष

भवानी राम जी बतौर लोक कलाकार अपने लोगों से, समाज से, संस्थाओं से और सरकार से बस यही अपील करते हैं कि हमारी लोक संस्कृति व कला का संरक्षण करने का प्रयास कीजिये। इन्हें सीखने-सिखाने हेतु अवसर व मंच दीजिये। जब कलाकार ही नहीं बचेंगे तो कला कैसे पोषित होगी। बचे हुए कलाकारों के साथ ही यह लोक विधायें भी विलुप्त हो जायेंगी। यह लोक कलाकार हमारी लुप्त हो रही विधाओं के अंतिम संरक्षक हैं। अतः इनका सम्मान करना और इन्हें मंच देना हमारे पूरे समाज का दायित्व है।

झोड़े में दर्ज 'तामी', 'कूड़ी', 'पाथा' व 'दोण' जैसे मापन के शब्द मध्ययुगीन कुमाऊँ की अर्थव्यवस्था के साक्ष्य को भी दर्शाते हैं अर्थात् इन्हें 'जीवित संग्रहालय' कहा जा सकता है। लौकिक, सौज्यू, तामी जैसे शब्दों का अर्थ सहित संकलन कुमाऊँनी बोली के शब्दकोश को भी सुदृढ़ बनाता है। इस शोध पत्र के माध्यम से भवानी राम जी के मौखिक गीत लिखित रूप में स्वरलिपिबद्ध करते हुए संरक्षित किए गए हैं। अतः अब यह लोकगीत संगीत के छात्रों के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में उपलब्ध हैं। रणसिंगा नामक लोक वाद्य का निर्माण, वादन-विधि और सामाजिक उपयोग का दस्तावेजीकरण भी इस शोध पत्र में हुआ है।

शिक्षण संस्थाओं एवं सरकार द्वारा यह अपील की जा सकती है कि 'भवानी राम जी' जैसे कलाकारों को 'गुरु-शिष्य परंपरा' योजना के अंतर्गत 'लोक गुरु' नियुक्त करते हुए मासिक मानदेय पर रखने का अनुदान प्रदान किया जाय। इस कार्य के माध्यम से हमारे लोक कलाकारों को असली पहचान मिल पायेगी और हम अपने लोकगीतों को अनंत काल तक सहेज पाने में समर्थ हो पायेंगे।

संदर्भ

1. राम, भवानी (लोक कलाकार), रीता पाण्डे कापड़ी द्वारा साक्षात्कार, 12 सितम्बर 2020, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, ऑडियो-वीडियो संकलन, ग्राम- आगरनौला, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड
2. वही
3. राम, भवानी (लोक कलाकार), रीता पाण्डे कापड़ी द्वारा साक्षात्कार, 18 सितम्बर 2020, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, ऑडियो-वीडियो संकलन, ग्राम- आगरनौला, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड
4. वही
5. वही
6. वही
7. राम, भवानी (लोक कलाकार), रीता पाण्डे कापड़ी द्वारा साक्षात्कार, 19 सितम्बर 2020, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, ऑडियो-वीडियो संकलन, ग्राम- आगरनौला, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड
8. वही
9. वही
10. राम, भवानी (लोक कलाकार), रीता पाण्डे कापड़ी द्वारा साक्षात्कार, 20 अक्टूबर 2020, उत्तराखंडी लोक कलाकार मौखिक संग्रह, ऑडियो-वीडियो संकलन, ग्राम- आगरनौला, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड
11. झोड़े गाते हुए गेवाड़ घाटी के लोक कलाकार